पंजाब केसरी
नई दिल्ली/ जयपुर
बुधवार, 24 नवंबर, 2010
Website : www.punjabkesari.com

पुस्तक परिचय

समीक्ष्य पुस्तक अंग्रेजी पुस्तक ब्रूम एंड ग्रुम का हिन्दी अनुवाद है। देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी और पवन चौधरी द्वारा व्यक्तित्व विकास पर आधारित पुस्तक 'कायदे के फायदे' में पीड़ा और उम्मीद की अभिव्यक्ति की गई है। पुस्तक के लेखकों का मानना है कि समाज में पर्याप्त सामाजिक शिष्टाचार का अभाव अत्यंत पीड़ाजनक है, वहीं उन्हें इस बात की भी उम्मीद है कि समाज आने वाले समय में और अधिक जागृत और संवेदनशील हो जाएगा जिससे लोगों की सोच में जरूर बदलाव आएगा। इस पुस्तक के जरिए हम अपने व्यवहार के जरिए दुनिया पर किस प्रकार विजय पा सकते हैं, उन्हें शब्दों के रूप में पिरोया गया है। आज के समाज में जहां आपाधापी में मानव जाति में संवेदना का अभाव देखने को मिल रहा है, प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में वह मानवता को भूलता जा रहा है, यह पुस्तक निश्चित तौर उन लोगों के लिए मार्गदर्शिका का काम करेगी। इसमें दिए गए सारगर्भित बातों को अगर हम आने जीवन में आत्मसात कर लें तो यह हमारे जीवन में गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक हो सकती है। इस पुस्तक का मूल मंत्र है स्वच्छता और सभ्यता। लेखकों का मानना है कि यह पुस्तक जहां एक ओर विद्यार्थियों को सामाजिक संवाद की प्रक्रिया में विशिष्टता प्रदान कर सकती है, वहीं कार्पोरेट क्षेत्र एवं सरकारी कर्मचारियों को ज्यादा अच्छी तरह से मैत्रीपूर्ण संवाद स्थापित करने में सहायक होगी। पुस्तक में पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम के संदेशों को स्थान दिया गया है जिसमें उन्होंने पुस्तक में दी गई सामाग्रियों से प्राप्त अनुभवों को शब्दों के जरिए पेश किया है।

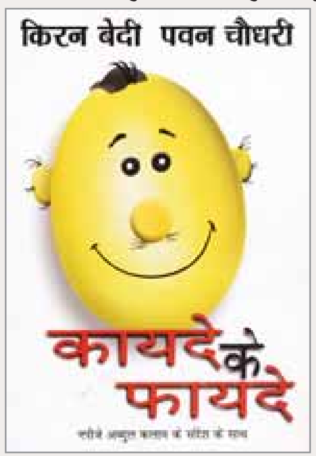

पुस्तक : कायदे के फायदे, **मूल लेखक :** किरण बेदी एवं पवन चौधरी, **हिन्दी अनुवाद :** मंजरी चतुर्वेदी, **पृष्ठ संख्या :** 168, **मूल्य :** 110 रुपये मात्र, **प्रकाशक :** विज्डम विलेज (प्रकाशन विभाग), 649, ओ4यू, उद्योग विहार, फेज 5, गुड़गांव।

● **फीडे**

मेहनतकश इंसान को देर-सबेर सफलता जरूर मिलती है, लेकिन चंद ही ऐसे लोग होते हैं जो जिंदगी में सफलता के नए आयाम लिखते हैं। उनकी सफलता के पीछे मेहनत के अलावा कुशल प्रबंधन होता है। जिस व्यक्ति को सफल प्रबंधन का नुस्खा पता है, वह व्यक्ति मिट्टी को भी सोना बना सकता है। समीक्ष्य पुस्तक 'सीक्रेट आफ सक्सेस' में सफलता प्राप्त करने के कुछ मूलमंत्र दिए गए हैं जिसके जरिए व्यक्ति सफल हो सकता है। लेखक का मानना है कि किसी भी व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे पहले संकल्प की जरूरत होती है, पक्के इरादे करने के बाद उन्हें अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देनी चाहिए। उनका कहना है कि कल्पना शक्ति, सहनशीलता, मेहनत के साथ-साथ रचनात्मकता का होना अत्यंत जरूरी है। लेखक के अनुसार सही बाडी लैंग्वेज, खुद को परखने की आदत, शिष्ट आचरण और आशावादिता के जरिए सफलता प्राप्त की जा सकती है। लेखक का कहना है कि प्रत्येक व्यक्ति में एक हुनर होता है, लेकिन जरूरत होती है उसके विकसित करने की। पांच अध्यायों में बंटी इस पुस्तक में व्यक्तित्व, कार्य, व्यापार, प्रतियोगिता व संबंधों के प्रबंधन की संपूर्ण जानकारी दी गई हैं। जो सही निर्णय लेने, समय के महत्व को समझने, अपने लक्ष्यों को ऊर्जा के साथ प्राप्त करने तथा नेतृत्व शक्ति विकसित करने व इसे बेहतर बनाने में मदद करेगी। लेखक का मानना है कि सफलता जिंदगी में दो बार आती है पहले दिमाग में फिर जीवन में। और सफल वही व्यक्ति होता है जो अवसर के अनुकूल व्यवहार कर उसे अपना सके। लेखक का मानना है कि विचार में ऊर्जा होती है, विचार में शक्ति होती है, आपके विचार ही आपको सफलता की राह पर लेकर जाते हैं, अत: विचारों में सकारात्मकता का पुट ही आपको सफल बना सकता है।

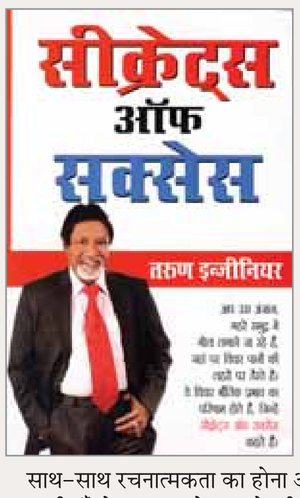

पुस्तक : सीक्रेट्स आफ सक्सेस, **लेखक :** तरुण इंजीनियर, **पृष्ठ संख्या :** 264, **मूल्य :** 125 रुपये मात्र, **प्रकाशक :** डायमंड बुक्स प्रा. लि., एक्स-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली - 110020।

● **फीडे**

व्यंग्य

सपने देखो, वरना ...!

उस दिनों पत्नी ने अखबार में पढ़ा, ''मंजिल पाने के लिए सपने देखना जरूरी है।''

वह तुरंत मेरे पास हाजिर हुई, ''देखो जी!'', अखबार का वह पृष्ठ, जिसमें वह समाचार छपा था, दिखाते हुए वह बोली, ''मैं जब भी सपने देखने की बात करती थी, आप मुझे बकवास औरत की संज्ञा देकर अपमानित करते थे। लो, अब पढ़ लो उन लोगों के विचार, जो मंजिल के बड़े-बड़े सपने देखकर मंजिल तक पहुंचे हैं और एक तुम हो, जो सपनों को महज दिमाग की प्रतिक्रिया मानकर टाल जाते हो। अब बताओ, बकवास कौन है? मैं या तुम?''

पत्नी ने मुझे समझाने का प्रयास करते हुए अपना सबूत रखा। उसके पेश किए सबूत के सामने हम हथियार डालते हुए नजर आ रहे थे। थोड़ी सी माथापच्ची के बाद हमने भी पासा फैंका, ''ठीक है, तुम सपने देखने को कहती थी, मैं मानता हूं। मैं यह भी मान लेता हूं कि सपने देखकर मन में कार्य करने की इच्छा जागृत कर सफलता प्राप्त की जा सकती है मगर तुम तो भूत-प्रेत, डायन आदि के सपने देखती हो, जो तुम्हें पकड़ने के लिए दौड़ते हैं और तुम सपने में भागती-फिरती चिल्ला उठती हो। इसका प्रमाण तुम्हें गहरी नींद में तुम्हारे मुंह से निकली इस चीख से दिया जा सकता है, 'बचाओ-बचाओ! मुझे डायन पकड़ रही है।' अब बताओ, तुम कौनसी सफलता प्राप्त करने के सपने देखती हो।''

पत्नी ने हमारा तर्क सुना तो उसे बुरा लगा, ''देखो जी, हर समय उल्टी-सीधी बातें करके मेरा मजाक मत उड़ाया करो। मैं अपना सबूत रात की नींद में आने-जाने वाले सपनों के पक्ष में नहीं दे रही हूं बल्कि दिन में जागती आंखों से देखे जाने वाले उद्देश्यपूर्ण सपनों के पक्ष में दे रही हूं।''

''कैसे?'' हमने कहा।

''जैसा कि जब से मैंने यह अखबार पढ़ा है, तभी से सपने देख रही हूं कि मुझे दो तोले सोने का हार मिल जाता तो कितना अच्छा रहता!'' पत्नी ने अपना उद्देश्य बताया।

''क्या?''

''और नहीं तो क्या?''

''जानती हो, दो तोले के सोने के हार का मूल्य कितना होगा! इधर बच्चों की पढ़ाई में आ रहा खर्च क्या मेरे कक्का उठाएंगे? सोने का हार खरीदने का सपना देखकर हार प्राप्ति की सफलता कोई मूली का हरा-भरा खेत नहीं है कि जब जी चाहा, सपना देखा और उखाड़ लाए।'' मैंने कहा।

''मैं कुछ नहीं जानती। इसके लिए आप सपने देखो।'' पत्नी ने जिद पकड़ते हुए कहा।

''कि तुम्हें हार मिल जाए?'' मैंने कहा।

''और नहीं तो क्या कह रही हूं।'' पत्नी बोली।

''ठीक है, मैं सपने देखता हूं। रोज देखूंगा। अगर तुम्हें सोने का हार नहीं दे सका तो मुझे दोष मत देना।'' हमने अपने तर्क को वजनदार बनाते हुए कहा।

''मैं ऐसे सपने देखने को नहीं कह रही कि तुम शेखचिल्ली बन जाओ और खुद ही खुद मुस्कराते रहो।'' पत्नी ने कहा।

''अरी भाग्यवान! शेखचिल्ली की तरह सपने देखकर मुस्कराएं नहीं तो क्या मतलब सपने देखने का?''

''देखो जी, अब मैं फालतू की बातें नहीं सुनना चाहती। तुम रोज सपने देखोगे और हां सिर्फ सपने ही देखकर समय बर्बाद न करते हुए उसे साकार करने के उपाय भी ढूंढ़ोगे।''

''तुम्हारा मतलब?'' हमने पूछा।

''बात यह है कि घूस के रेट कैसे बढ़ाए जाएं, कौनसी सामग्री का फर्जी बिल लगाएं और दफ्तर की कौनसी सामग्री गोलमाल कर मार्किट में बेच दें, जिससे आमदनी के स्रोत में इजाफा हो। तनख्वाह से बचत करोगे। इसके लिए दिन में पांच पान के बजाय दो पान, दो गुटखे के बजाय एक गुटखे से काम चलाओगे। होटल में नाश्ता व घर में स्वादिष्ट मसालेदार भोजन बंद करके बीमार परहेजी की तरह हल्का-फुल्का भोजन ग्रहण करोगे। अगर यह सूत्र अपना लेते हो तो साल भर में बनने वाला सोने का हार सिर्फ चार माह में ही बनकर तैयार हो जाएगा, समझे।''

पत्नी ने अपने दिए उपायों से हमें समझाने का प्रयास किया तो हमारे होश ठिकाने आ गए। हमने पूछा, ''तुम मुझे सही सलामत नौकरी करने देने का सपना दिखाने हेतु प्रेरित कर रही हो या सस्पैंड होकर अपने ऊपर विभागीय जांच चलवाकर लकड़ी की तरह सूखता देखना चाहती हो?''

''इसमें सस्पैंड होने या लकड़ी की तरह सूखते देखने की बात कहां से ले आए? तुम्हारे दफ्तर में ऐसा कौन ईमानदार पट्ठा है, जो भ्रष्टाचार की बिना घी लगी रोटी खाकर अपना पेट भर रहा है, जरा बताओ।''

हम आगे कुछ कहने को तैयार हुए कि वह पुन: शेरनी की भांति गुर्रायी, ''देखो, अब अपना मुंह बंद रखना।''

''वरना?'' हमने कहा।

''फिर अगर मेरा मुंह खुला तो बंद होने से रहा।

''तुम आखिर कहना क्या चाहती हो?''

''यही कि तुम नंबर वन के धोखेबाज, वायदा खिलाफ व स्वार्थी इंसान हो, यह बात तुम्हारे स्टाफ के सभी कर्मचारियों के घर में बीज की तरह बो दूंगी।'' उसने हमें धमकी दी।

''यह क्या कह रही हो? इतनी व्यवस्थित गृहस्थी चलाने के बावजूद तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो! जबकि स्टाफ के बीच मेरी छवि एक ईमानदार और सभ्य आदमी के रूप में जानी जाती है।''

''तुम जैसे सभ्य बनाम टेढ़े उल्लुओं को सीधा करने का हम औरतों के पास यही हथियार होता है। त्रिया चरित्र की कथाएं तो आपने खूब पढ़ी हैं।'' हम उसकी बातें सुन-सुनकर खामोश थे। वह समझ गई कि पंछी दाना चुगने को जाल पर उतर चुका है। वह तुरंत बोली, ''हां तो बस समझ जाओ ...!''

● **सुनील कुमार 'सजल'**

लघुकथा

अपना घर

विभा को अक्सर अखरता है अम्मा को दिनभर काम में लगा देखकर। आराम करने वाली इस उम्र में भी बेचारी सुबह से शाम तक घर के कामकाज में लगी रहती हैं। भैया को तो उनकी कोई परवाह ही नहीं है। और भाभी तो भाभी ठहरी। सुबह ही सारे काम एक साथ अम्मा को बताकर बेफिक्र हो जाती हैं।

इसीलिए तो विभा इस बार जब ससुराल से आई तो उसने अम्मा से कहा, ''अम्मा, तू चल मेरे यहां। दो रोटी खाना और आराम से रहना।''

''नहीं रे! मुझे नहीं जाना तेरे यहां'', अम्मा तपाक से बोली, ''मैं यहीं ठीक हूं।''

''यहां क्या खाक ठीक हो?'', विभा को गुस्सा आ गया, ''दिनभर कोल्हू के बैल की तरह पिसती रहती हो। ये भी कोई काम करने की उम्र है? नहीं तू चल मेरे यहां।''

''नहीं रे, मैं नहीं जाऊंगी तेरे साथ। यहां काम करना पड़ता है तो क्या हुआ?'' अम्मा ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

तब विभा कुछ नरम स्वर में बोली, ''अम्मा, शायद तू यह सोच रही होगी कि लोग हंसेंगे और कहेंगे कि बेटी के यहां जाकर रह रही है!''

''हां, लोग तो कहेंगे ही और हंसेंगे भी'', अम्मा का स्वर कुछ तेज हो गया, ''अपना घर, अपने बहू-बेटे को छोड़कर तेरे वहां रहूंगी तो अपना घर कैसा भी हो, अपना ही होता है।''

सुनकर विभा को अम्मा से और कुछ कहते न बना। वह अम्मा की मंशा समझ चुकी थी।

● **प्रेम कुमार**

कविता

नौकरशाही

नौकरशाही कर रही है भारत पर है राज
महफिल हो या बैठकें सर पर उनके ताज
सर पर उनके ताज कहें अब जिलाधिकारी
किंतु कलेक्टर कहती है पहले जनता सारी
कर कलेक्ट राजस्व जिले में रौब जमाया
टर श्रेणी में नंबर वन नाम कमाया
बिना अर्दली के जाये कहीं न जीव
देख परायी चोपड़ी ललचाती है जीभ
दमड़ी न हो खर्च शान महाराजाओं जैसी
स्वागत में हर दुकानदार हैं पलक बिछाता
शापिंग करती मैम साहब बिल कभी नहीं आता
नीली बत्ती के बिना गाड़ी लगे है सून
मस्त कलेक्टर साहब हैं सिसक रहा कानून
सिसक रहा है कानून माफिया छूट्टे घूमें
लुच्चे-गुण्डे बेइमान खुश होकर घूमें
पान खा रहा है डान नहीं चेले डर खाते
लेते-देते रोज सुपारी रोज है मौज उड़ाते॥

● **के.एल. सैनी (सदस्य, वरिष्ठ नागरिक केसरी क्बल), सफदरजंग शाखा**

कहानी

हिलती हुई दीवारें

भावना के स्नातक की शिक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए थे और उच्च शिक्षा से पूर्व परीक्षा में भी अच्छा रैंक पाकर बड़े शहर के अच्छे कालेज में दाखिला पा लिया था जबकि उसके दोनों भाई सदा परीक्षा में मुश्किल में उत्तीर्ण होकर भी संतुष्ट हो जाते थे। उसे कालेज के होस्टल में कमरा मिल गया था और वह मन लगाकर बड़ी मेहनत कर रही थी ताकि भाविष्य में कुछ बन सके, नाम कमा सके। कालेज में उसकी मित्रता सहपाठी छात्रा रंजना से हो गई थी। रंजना का बड़ा भाई विवेक कई बार अपनी बहन को कालेज छोड़ने आया करता था और इस प्रकार भावना से भी कभी-कभी नमस्ते, हाय हैलो हो जाया करती थी। भावना एक चुपचाप रहने वाली, बेहद कम बात करने वाली, अंतर्मुखी स्वभाव की लड़की थी जबकि रंजना और उसके भाई का स्वभाव खुलकर बातें करना, सबसे मेलजोल रखना और मौजमस्ती करने वाला था। मगर तब भी भावना व रंजना में अच्छा तालमेल बन गया था, घनिष्ठता हो गई थी। विवेक एक कंपनी में अच्छे पद पर काम कर रहा था और अच्छो वेतन पा रहा था। उसके पापा का अच्छा करोबार था, अच्छा रहन-सहन था। पापा-मम्मी जब कभी उसे विवाह करने की बात कहते तो उसका जवाब होता कि अभी तक उसे अपनी पसंद की लड़की मिली ही नहीं और जब भी मिली तो वह उसे लाकर उनके सामने खड़ा कर देगा। विवेक और भावना कब एक-दूसरे के करीब आ गए दोनों को पता ही नहीं चला। शुरू-शुरू में विवेक भावना को उसके मोबाइल पर किसी न किसी बाहने बात करने लगा था, कभी रंजना की पढ़ाई, कभी कालेज से लाने ले जाने के संदेश को लेकर, रंजना ने काल रिसीव नहीं की, शायद वह क्लास में होगी, उसे ये बात बोल देना। बातों का सिलसिला धीरे-धीरे एक गहरी पहचान बन गया था। एक-दो बार भावना रंजना और विवेक फिल्म देखने गए थे, कभी-कभी छुट्टी के दिन किसी रैस्टोरेंट में खाना। जब उन दोनों को विश्वास हो गया था कि हमें उम्र भर साथ निभाना है तब भावना ने यह बात सबसे पहले रंजना को ही बताई थी, विवेक ने ही उसे ऐसा करने को कहा था। रंजना को भी कुछ-कुछ आभास पहले से था मगर भावना के मुंह से उसके व विवेक के प्यार की बात सुनकर उसे बहुत अच्छा लगा था क्योंकि वह जानती थी कि भावना बहुत ही अच्छे स्वभाव की व एक काबिल लड़की है और उसके भाई के लिए एक अच्छा जीवन साथी बन सकती है। रंजना ने घर जाकर अपनी मम्मी को उन दोनों के प्यार की बात बता दी और वह भी खुश हुई थी, उन्हें भी भावना का स्वभाव सदा बेहद अच्छा लगता था। विवेक के पापा को जब उनकी धर्मपत्नी ने भावना के बारे में बताया और कहा था कि रंजना उसे बहुत करीब से जानती है और वह आजकल की लड़कियों से बिल्कुल अलग बड़ों को आदर-सम्मान देने वाली अच्छे संस्कारों वाली लड़की है तो उन्होंने भी हामी भर दी थी और कहा था कि विवेक से कहो भावना से बात कर जितना जल्द हो सके बात आगे बढ़ाए और दोनों बच्चों के परिवार के लोग मिलकर रिश्ता तय कर दें। मगर जब विवेक ने भावना से मिलकर इस बारे बात की कि मेरे मम्मी-पापा तुम्हारे माता-पिता से मिलकर रिश्ता तय करना चाहते हैं तो वह खामोश हो गई थी। प्यार के रंगीन सपने देखते समय रंजना इस वास्तविकता को भुला बैठी थी कि उसका परिवार व उसके पिता बेहद रूढ़िवादी मान्यताओं में जकड़े संकुचित समाज के लोग हैं जो किसी लड़की को अपनी पसंद से विवाह करने की स्वीकृति प्रदान नहीं करने वाले। विवेक ने उससे खामोशी का कारण जानना चाहा तो रंजना ने बताया था कि उसके परिवार में बेटी को अपनी पसंद बताने का कोई अधिकार हीं नहीं मिलता और अगर उसने इस बारे बात की तो न जाने परिवार के लोग उसके साथ क्या सलूक करेंगे। भावना ने बताया था कि आज तक वह अपने मन की बात घर के किसी सदस्य को कभी बता नहीं सकी है। उसने विवेक से कहा था कि इतना तय है कि वह जब भी विवाह करेगी तो केवल विवेक से ही अन्यथा वह कभी विवाह ही नहीं करेगी। विवेक ने उसे तसल्ली दी थी कि तुम चिंता मत करो। हम हर हाल में उम्रभर साथ निभाने का अपना वादा निभाएंगे। उसने भावना से घर का पता, फोन नंबर ले लिया था और कहा था कि मेरे पापा स्वयं तुम्हारे परिवार के लोगों से बात कर सब तय कर लेंगे, तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं है। रविवार की सुबह विवेक के पापा ने भावना के घर फोन पर उसके पिता से बात की थी। अपने बेटे, अपना परिचय, भावना और रंजना की मित्रता के बोर में बताया था और कहा था कि हम आप लोगों से मिलना चाहते हैं। कब आ सकते हैं अथवा क्या आप यहां आकर हमसे मुलाकात करना चाहेंगे। जैसा कि भावना के पिता बलबीर का स्वभाव था उसने तल्खी से सवाल किया था कि आप किस काम के लिए हमें मिलने आना चाहते हैं। विवेक के पापा ने स्पष्ट कर दिया था कि वे दोनों एक-दूसरे को पसंद करते हैं और हमें भी भावना पसंद है अत: हम उनका रिश्ता आपसे मिलकर तय कर देना चाहते हैं। उनकी बात सुनकर बलबीर को गुस्सा आ गया था और उसने विवेक के पापा को कहा था कि हमें आपसे नहीं मिलना है न ही हम इस प्रकार के रिश्ते को कभी स्वीकार करेंगे। आप अपने बेटे को समझा दें कि वह भविष्य में भावना से कभी न मिले, हम भी अपनी बेटी को रोक देंगे। आप इस बारे फिर कोई बात न करें इसी में आपकी भलाई है। विवेक ने भावना को फोन करके यह सारी बातें बता दी थीं जिसे सुनकर रोने लग गई थी।

(क्रमश:)

● **डा. लोक सेतिया**
फतेहाबाद, हरियाणा

सूचना

पंजाब केसरी के सभी पाठकों से निवेदन है कि कृपया अपनी लिखी कहानियां, लघु कथाएं हमें नीचे लिखे पते पर भेजें। कहानी साफ शब्दों में लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए। पसंद आने पर कहानी नाम, पते व फोटो सहित प्रकाशित की जाएगी।

पता : पंजाब केसरी, 2 प्रिंटिंग प्रैस काम्पलेक्स, नियर सुभाष प्लेस डीटीसी डिपो, वजीरपुर दिल्ली-35

गजल

दिलों में बुग्जो-कुदूरत है क्या किया जाये
ये अहदे-नौ कि सियासत है क्या किया जाये
वो जिसका नाम था बस घर जलाने वालों में
उसी की शहर में इज्जत है क्या किया जाये
फिर उसके तर्जे-तकल्लुम में खुदसरी आयी
हमें भी उससे शिकायत है क्या किया जाये
मिजाज बिगड़ा हुआ है अभी हवाओं का
समन्दरों की मुसाफत है क्या किया जाये
कदम-कदम पे दिल-सोगवार रोता चल
इसी का नाम मुहब्बत है क्या किया जाये
वो फिर गुलाब के फूलों को रौंदकर निकला
ये उसका रंगे-तबीअत है क्या किया जाये
अयां है चहरों से नकली शराफतें 'अनवर'
ये एक तल्ख हकीकत है क्या किया जाये
उठे तो सारे जमाने पे छा गये हम लोग
गिरे तो जीस्त की पस्ती में आ गये हम लोग
जो एक जिन्से-मुहब्बत हमारी अपनी थी
उसी को बेच के दुनिया में खा गये हम लोग
हम अपने आपके दुश्मन बने हुये हैं यहां
खुद अपनी राहों में कांटें बिछा गये हम लोग
नजर में थीं कई खुशहाल मंजिलें लेकिन
तबाहियों के किनारे पे आ गये हम लोग
कहां से मिल गई हमको ये बिजलियों की सिफत
जिधर से निकले वहीं घर जला गये हम लोग
निकल के बहरे-मुहब्बत के आजकल 'अनवर'
हवस के अंधे कुंए में समा गये हम लोग
हम अपने मुल्क की तकदीर को बदल न सके
जो हादिसे भी मुकद्दर में थे वो टल न सके
कमंद हमने भी फैंकी थी आसमानों में
गमों की भीड़ में आगे मगर निकल न सके
रिवायतों की लकीरों को पीटने वाले
बदलते वक्त के सांचों में अब भी ढल न सके
हमीं ने अपने लिये तीरगी का जाल बुना
हमीं से राहे-मुहब्बत के दीप जल न सके
बना के काफिला निकले ही थे बिछुड़ भी गये
जरा-सी दूर भी हम साथ-साथ चल न सके
निजामें-गुलशने-हस्ती को यूं बदल 'अनवर'
किसी भी फूल को गुलचीं कभी मसल न सके

● शकूर अनवर, श्रीपुरा, कोटा (राजस्थान)

दूसरों को सुधारने की अपेक्षा स्वयं में सुधार करना श्रेष्ठ है।

R.N.I. No. 404 74/83, Postel Regn. No. DL (N)05/0169/2009-2011